॥ श्री श्याम भावांजलि ॥

नाग सुता सुत श्याम को सुमरू बाराबार, खाटू वाले श्याम हो, तुम जग के दातार ।
काम कला जानू नहीं बिल्कुल हूँ अज्ञान ज्ञान ध्यान मोहे दीजिए, आकर कृपा निधान ।
सरल सलोने सोहाने सुंदर सावल श्याम, रखियाँ अपने दास पर अपनी मेहर निगाह ।
खाटू खंडेले बीच में बनो आपको धाम, जो कोई ध्यावे प्रेम से, पूर्ण होवे सब काम ।
हाथ जोड़ विनती करूँ सुणियों चित्त लगाय, दास आ गयो शरण में रखियो इसकी लाज ।
धन्य दूंदारो देश हैं खाटू नगर सुजान, अनुपम छवि श्री श्याम की, दर्शन से कल्याण ।
श्याम श्याम तो मैं रटूँ श्याम है जीवन प्राण, श्याम भक्त जग में बड़े उनको करूँ प्रणाम ।
श्याम नाम रटते रहो, श्याम बड़े दातार, सब शन्शय मिट जायेंगे, कहके दास पुकार ।
श्याम नाम एक मंत्र है रटीयो सकल सुजान, कब हूँ तो दीनदयाल के भनक पड़ेगी कान ।
श्याम नाम सबसे बड़ो, इससे बड़ो ना कोई, जो कोई गावे प्रेम से, हृदय उजालों होए ।
श्याम नाम मीठो घनो, श्याम सुधारे काम, नाम लेत कृपा करी, जय जय बाबा श्याम ।
श्याम रटे संकट कटे, होत हृदय में ज्ञान, फागुन शुक्ला मेला भरे, जय जय बाबा श्याम ।
श्याम समान दाता नहीं, विपत्ति निवारण हार, लीले के असवार हे, कलियुग के अवतार ।
फागुन शुक्ला द्वादशी उत्सव भारी होय, बाबा के दरबार से खाली जाए न कोय ।
उमा पति लक्ष्मी पति सीता पति श्री राम, लज्जा सब की रखियो खाटू के बाबा श्याम ।
पान सुपारी इलायची इतर सुगंध भरपूर, सब भक्तन की विनती दर्शन देवो हुजूर ।
एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आध, तुलसी संगत साधकी, हरे कोटि अप्राध ।
देवं दीन्हि दुंदुभि प्रभु पर बरसें फूल, हरषे पुर नर नारी सब, मिते मोहमय सूल ।
भक्त जन तो प्रेम से हरे श्याम को ध्यान खाटू मंडल पावे सदा, श्याम कृपा से मान ।
खाटू मंडल पावे सदा, श्याम कृपा से मान, श्याम कृपा से मान, श्याम कृपा से मान ।